Vol 4 Issue 2 Nov 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
ISSN:-2249-894X
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
Vol. 4 | Issue. 2 | Nov. 2014
Available online at www.ror.isrj.org

थराली क्षेत्र की महिलाओं का सामान्य जीवन एवं समाज में सहभागिता

मोहन सिंह नाथ

प्रवक्ता – हिन्दी , रा.इ.का. नारायण नगर सिनांई , जिला –चमोली गढवाल (उत्तराखण्ड़)

सारांश :- ''यत्रा नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्रा देवता''
जहॉ नारी की पूजा होती है या नारी का सम्मान होता है, वहॉ देवता निवास करते हैं।

किसी भी क्षेत्रा या गॉव समुदाय के लोगों के जीवन तथा खान–पान, रहन–सहन, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा विभिन्न सुविधाओं के कारण उस क्षेत्रा की भौतिक सामाजिक तथा उस क्षेत्रा के भौगोलिक परिवेश के स्पष्ट स्वरूप तथा प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। क्योंकि किसी भी गॉव क्षेत्रा के विकास में वहॉ के शैक्षिक स्तर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्ति जिस परिवेश में निवास करता है उसी के अनुरूप वह स्वयं हो जाता है। क्योंकि शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उद्देश्य पूर्ण जीवन यापन की संप्राप्ति में सहायता प्रदान करती है। क्योंकि शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो समाज में विभिन्न क्षेत्राों के सदस्यों की समाज के निरंतर बदलते हुए पहलुओं को अपनाने में सहायता करती है। महिला परिवार की गृहलक्ष्मी के साथ–साथ शिक्षिका भी होती है। वह विपती के समय सत्यपरामर्श के रूप में कर्त्तव्य पालन करती है। माता के समाज स्वार्थ रहित साधना और सेवा में तल्लीन होती रहती है। दुख के समय वह पत्नी के रूप में अपने पति को पूर्ण सुख प्रदान करती है। परिवार समाज तथा राष्ट्र निर्माण में महिलाओं का सर्वोपरी स्थान होता है। पुरूष को समाज में सर्वोत्म स्थान प्राप्त होने के वाबजूद भी स्त्राी अपने उत्तरदायित्वों का कुशल पूर्वक निर्वाहित करती है। पुरूषों का रोजगार हेतु देश–विदेश जाने पर वह अपने घर परिवार के समस्त कार्यो को करने में दक्ष मानी जाती है। जिस कारण वे परिवार के एक जिम्मेदार, आत्मनिर्भर महिला के रूप में अपने कार्यो को करती है। वह ग्रामीण परिवेश की विषम भौगोलिक परिवेश में जीवन यापन करती है, तथा समाज में जीने की एक नई प्रेरणा प्रदान करती है। किसी भी क्षेत्रा समाज एवं परिवेश के लोगों पर वहॉ के भौगोलिक व समाजिक, राजनैतिक स्वरूप का स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव दृष्टिगत होता है।

प्रस्तावनाः–

शोध विवेच्य शीर्षक का क्षेत्रा अपने भौगोलिक एवं सामाजिक स्वरूप में कुछ इस प्रकार से है

भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है। इस समाज में स्त्रियों की स्थिति हमेशा दासों जैसी रही है। समाज का एक महत्वपूर्ण अंग होने के बावजूद भी स्त्राी को कभी भी समाज के मुख्य अंग के रूप में स्वीकार नही किया गया है। प्रकृति ने जीवन व्यवस्था में दो तत्वों को महत्वपूर्ण रूप दिया– एक स्त्राी और दूसरा पुरूष। समाज के विकास में दोनों ही पक्षों ने अपना–अपना भरपूर सहयोग दिया। कोई भी पक्ष दूसरे पक्ष की तुलना में न तो अधिक ऊॅचा है और न अधिक नीचा, लेकिन फिर भी सामाजिक मान्यताओं ने स्त्राी को तो पुरूष के बराबर का हक नही दिया।

Title: "*थराली क्षेत्र की महिलाओं का सामान्य जीवन एवं समाज में सहभागिता* ", Source: Review of Research [2249-894X] *मोहन सिंह नाथ* **yr:2014 | vol:4 | iss:2**

समाज ने एक ओर तो पुरूष को सर्वोच्चता के शिखर पर प्रतिष्ठित कर, भारतीय समाज को पुरूष प्रधान समाज की बना दिया और स्त्राी को निचले तबके का प्राणी घोषित कर दिया। विशेषकर उत्तराखण्ड़ी समाज में स्त्राी पारिवारिक और सामाजिक मान्यताओं को सह रही है और उनके प्रति बिना किसी उदासीनता के संघर्षरत है। यहॉ की महिलाओं का जीवन स्तर भिन्न–भिन्न है इसी कारण के फलस्वरूप यहॉ की सामाजिक परम्पराऍ, आर्थिक पिछड़ापन एवं शिक्षण संस्थानों के अभाव में स्त्राीयों की अशिक्षित एवं अविकसित होने की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि उजागर होती है। यहॉ की विषम भौगोलिक दशा को देखकर यह ज्ञात होता है कि यहॉ प्रारम्भ से ही शिक्षण संस्थानों का वितान्त अभाव रहा होगा इसी कारण यहॉ पर महिलाओं का अशिक्षित होने का कारण रहा है। हमारे पूर्वजों की मानसिकता के अनुसार महिला को घर शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजना भी नियम के विपरीत था। इन्ही सदियों की परम्पराओं ने महिला को निःस्वार्थ घर की सेविका बना दिया। आज यहॉ महिलाऍ समाज व परिवार संचालन में अहम भूमिका निभाने के बावजूद भी कष्ट पूर्ण स्थिति को सह रही है। समाज के कई बंधनों, नियमों, कुरीतियों व रूढ़ियों में जकड़ी हुई है। यहा आज भी स्त्रीायों की दयनीय दशा बनी हुई है, पुरूष सता के बोझ तले दबी हुई है। यह सब सहते हुए परिवार का पालन–पोषण और परिवार के सदस्यों की जिम्मेदारी को अपना कर्तव्य समझ कर पूरा कर रही है यहॉ की महिलाओं का जीवन इतना कठिन एवं करूण रहा है कि उसका अनुमान लगाना भी कठिन है। यहॉ कि महिला अशिक्षा का मुख्य कारण यातायात के साधनों का अभाव एवं स्त्राी शिक्षा को अनुपयोगी समझा जाना पुरूष शिक्षा के उपयोगी माना जाने के कारण उन्हे शिक्षा ग्रहण करने हेतु घर से

बाहर दूर–दूर भेजा जाता था। महिला घर के काम–काज करना, बच्चों की देखभाल करना, जानवरों की देख–भाल, उनके लिए जंगलों से घास लाना, जानवरों की साफ–सफाई, खेती–बाड़ी करना और मजदूरी करना इत्यादि था। आज भी यही श्रम–शक्ति यहॉ की महिलाओं के अर्न्तगत आना है। मुख्य रूप से आज भी यहॉ पर स्त्राीयॉ कृषक और पशुपालक है। कृर्षि तथा पशुपालन उसकी मुख्य आजीविका ही नही उसका प्रतिष्ठापूर्ण जीवन कार्य भी है। यहॉ पर स्त्राीयों द्वारा मजदूरी करने का मुख्य कारण गॉव से पुरूषों का बहिर्गमन पलायन है। गॉव के खेत सीढ़ीनुमा होने के कारण कम उपजाऊ होते है। जिससे की कम समय तक ही उससे घर के खान–पान का कार्य चलाया जाता है। बाकी समय घर के पालन–पोषण की कठिनाई और आर्थिक स्थिति खराब हो जाने के कारण गॉवों के पुरूष शहरों की ओर जाने लगते हैं। इस कारण परिवार का सारा बोझ स्त्राी के कंधों पर होता है। यातायात की समुचित व्यवस्था न होने के कारण यहॉ पर महिलाऍ अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक नही है। इसके और भी कारण जैसे गरीबी, स्वास्थ्य केन्द्रों का अभाव, अशिक्षा, विभिन्न सामाजिक रूढ़ियॉ है। इस कारण किसी भी बीमारी का घरेलू उपचार किया जाता है। जिससे उन्हे ठीक होने में बहुत समय लग जाता है। प्रसवादि की कोई व्यवस्था नही है दूर–दराज के गॉवों में पांरपरिक तरीके से प्रसव होते हैं। कही विषम परिस्थिति में यातायात की सुविधा न होने के कारण कही महिलाओं को उठा कर लाते समय प्रसव रास्ते में हो जाते है। थराली क्षेत्रा हेतु सरकार द्वारा राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र थराली में स्थापित किया गया है। लेकिन स्वास्थ्य केन्द्र में चिकित्सकों एवं अन्य व्यवस्थाओं का अभाव होने के कारण यहॉ के लोग अत्यधिक स्वास्थ्य खराब होने के कारण बहुत दूर कर्णप्रयाग, हल्द्वानी, ऋषिकेश एम्स, देहरादून उपचार हेतु जाते हैं। जहॉ इन्हें विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यहॉ की भौगोलिक स्थिति विषमहै। ऊॅची–ऊची पहाड़ियॉ एवं घने बांज एवं बुरॉश के जंगल है चीड़ के पेड़ यहॉ पर कम मात्राा में हैं। इस कारण तापमान में कमी होती है। शीत ऋतु का समय लम्बा होता है महिलाऍ उस समय सर्दी से बचने हेतु काले कम्बल (पाखुला) जिसे स्थानीय भाषा में कहते हैं, को पहनती है। यह क्षेत्रा गढ़वाल में होने के उपरान्त भी कुमॉऊनी संस्कृति से मिलता–जुलता है कारण यह क्षेत्रा कुमॉऊ की सीमा बागेश्वर से लगा है।

थराली बाजार जो कि पिण्डर नदी के दोनों ओर बसा है। जहॉ पर विभिन्न स्थानों से लोग आकर बस गए है। थराली को विकास खण्ड़ एवं तहसील का दर्जा प्राप्त है जो इस क्षेत्रा के विकास के मुख्य केन्द्र है। सरकार के द्वारा राजकीय अस्पताल खोला गया है। बाजार में कई क्लीनिक भी वर्तमान में हैं, जो इस क्षेत्रा की स्वास्थ्य में उत्तरोतर वृद्धि कर रहे हैं। जिससे यहॉ के लोगों को काफी सुविधाऍ प्राप्त हो रही है। महिलाओं की स्थिति में प्रतिदिन सुधार हो रहा है। इस क्षेत्रा में कई प्राथमिक पाठशालाए, जूनियर हाई स्कूल, हाई स्कूल एवं इण्टर मीडिएट कालेज तथा डिग्री कालेज सरकार द्वारा खोले गए है। जिसमें लड़कियों को स्कूल भेजा जाता है यहॉ की लड़कियॉ घर का पूरा कार्य करके दूर–दूर स्कूलों तथा कालेजों में पढ़ने हेतु जाती हैं। पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन के साथ–साथ सामाजिक जागृति में भी इस क्षेत्रा की महिलाएं पीछे नही हैं। वे अनेक सामाजिक बंधनों एवं रूढियों के बावजूद भी आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ तथा सामाजिक चेतना की धुरी है। हालॉकि व्यक्ति विशेष के रूप में किसी महिला का नाम इस क्षेत्रा से नही आया लेकिन सामूहिक रूप से सभी महिलाओं ने

राज्य तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों में सक्रीय भूमिका निभाई है। अपने अद्‌भूत साहस का परिचय दिया है। साथ ही जंगल सरक्षण, पृथक उत्तराखण्ड़, शराब विरोध, महिला साक्षरता आदि विभिन्न आन्दोलनों में सक्रीय भागीदारी रही है। थराली में सरकार द्वारा अंग्रेजी शराब की दुकान खोली गई है। जिसके चलते यहॉ के कुछ लोग बर्बाद होने लग गए है। इस क्षेत्रा में शराब का चलन बहुत ज्यादा होने लग गया है। कुछ कर्महीन पुरूष दिन भर शराब के नशे में बाजार की गलियों में झूमते रहते हैं। और परिवार का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व महिलाओं को उठाना पड़ता है। इसके खिलाफ भी यहॉ की महिलाओं ने ''नशाबन्दी आन्दोलन'' में सक्रीय रूप से भाग लिया जिसमें कुछ हद तक इन्हें सफलता प्राप्त हुई है।

वर्तमान परिदृश्य : इस प्रकार देखा जा सकता है कि अपेक्षाकृत वर्तमान में महिलाओं के सामाजिक जीवन में वृद्धि हुई है। उनकी पारिवारिक एवं राजनीतिक सहभागिता में बढ़ोतरी हुई है। आज यहॉ पर महिला स्वतंत्रा होकर अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करती है एवं पुरूषों से अधिक निर्णय लेने में समर्थ है। वे अपने स्वास्थ्य, शिक्षा एवं भविष्य के प्रति जागरूक हो गई है तथा नवीन पीढ़ी को जागरूक कर रही है। मलिा का जीवन स्तर उन्नत होने लग गया है। यहॉ की महिलाएँ अधिकतर गॉवों में रहती है। वह शिक्षा का वास्तविक अर्थ समझ गई है। इसलिए अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए दिन रात काम मे जुटी रहती है। कुछ महिलाएँ गॉवों से थराली बाजार में रहने लग गयी है। ताकि बच्चों को अच्छा भविष्य तथा शिक्षा दे सके। इस तरह से देखा जाय तो परिवार का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व महिलाएँ ही उठा रही है। पुरूषों का गॉव से जो पलायन हो रहा है इससे भी महिलाओं की पारिवारिक जिम्मेदारी में अधिक वृद्धि हुई है। कुछ वर्षो से थराली क्षेत्रा की महिलाओं में बदलाव आया है। अब इस क्षेत्रा में महिला शिक्षा की ओर प्रयासरत है। कही महिलाएँ इस प्रयास से सरकारी नौकरी में है। कुछ महिलाएँ सिलाई–बुनाई के जरिए स्वयं एवं परिवार का रोजगार चलाती है अनेक महिलाएँ स्कूलों में पढ़ाती है। पिछले पॉच–सात वर्षो से इस क्षेत्रा में राजकीय महाविद्यालय, पालिटेक्निक कालेज खुलने से महिलाएँ शिक्षित हो रही है। पहले महाविद्यालय न होने से महिला उच्च शिक्षा से वंचित थी उच्च शिक्षा हेतु गोपेश्वर, श्रीनगर, देहरादून, हल्द्वानी जाना पड़ता था। जहॉ भेजने के लिए माता–पिता असहज महसूस करते थे। वर्तमान में महिलाओं की स्थिति में सुधार आया है। जिससे वह सामाजिक एवं राजनीतिक उत्तरदायित्वों का आसानी से निर्वहन कर रही है।

थराली क्षेत्रा की भौगोलिक स्थिति : थराली क्षेत्रा चमोली जनपद के मुख्यालय गोपेश्वर से 90 किमी0 की दूरी पर स्थित है। थराली पूर्वी पिण्डर नदी के तट के दोनों तरफ एक सीढ़ी नुमा आकार में बसा हुआ है। यहॉ पर ऊॅची–ऊॅची पहाड़िया जिन पर विभिन्न गॉव निवास करते है। इस क्षेत्रा की मुख्य जलवायु शीत होती है। यहॉ बॉज–बुरॉश के अति घने जंगल हैं। जो प्राकृतिक रूप से अति सुन्दर लगते हैं। साथ ही ऊॅची पहाड़ियों पर बुग्याल के मैदान है, जहॉ पशु चारक अपनी भेड़ों को चराते हैं, यहॉ से हिमालय की विभिन्न ऊॅची–ऊॅची चोंटियॉ नन्दा देवी, त्रिाशूली, चौरवाबा आदि हिमालय के दर्शन होते हैं। यहॉ पर मुख्य रूप से कृर्षि कार्य एवं पशुपालन का कार्य किया जाता है। यहॉ पर वर्षा ऋतु एवं शीत ऋतु में काफी मात्राा में वर्षा होती है। आवागमन हेतु यहॉ पर सभी स्थानों पर गॉवों में पूर्ण रूप से सुविधा प्राप्त नही है। लोग अत्यधिक दूर पैदल चलकर ही अपने निश्चित स्थानों पर पहुॅच पाते है। यहॉ की विषम भौगोलिक परिस्थिति यहॉ के लोगों का जीवन कष्टमय बनाती है। जिसका असर प्रभाव यहॉ के शैक्षिक स्तर पर पड़ा है।

थराली नामकरण की पौराणिक पृष्ठभूमि :

थराली एक प्राचीन पौराणिक स्थान है। जो पिण्डर नदी के तट पर दोनों तरफ सीढ़ीनुमा आकार में बसा है। इस स्थान का नाम थारू जनजाति के निवास के कारण थराली नाम प्रचलन में आया। यह स्थान प्राचीन समय से पशुओं का क्रय–विक्रय केन्द्र था। इस स्थान पर निवास करने वाली थारू जनजाति विभिन्न पशुओं का व्यापार करती थी। साथ ही इनके द्वारा उत्पादित विभिन्न पशुओं का व्यापार करती थी। साथ ही इनके द्वारा उत्पादित हींग, फरण, शिलाजीत, केशरी, काला नमक, कस्तुरी, आदि के साथ विभिन्न ऊनी वस्त्राों का भी इनके

द्वारा व्यापार किया जाता है। उनके पास स्वयं ऊन कातकर ऊनी वस्त्रा तैयार किया करते थे। विभिन्न स्थानों से लोग यहॉ पर ऊनी वस्त्राों एवं पशुओं को खरीदने आते थे। यह तिब्बती लोगों की तरह विभिन्न श्रृगांर वाले आभूषण पहना करते थे। साथ ही ऐसे आभूषणों को बेचा भी किया करते थे। इससे इस स्थान पर विभिन्न स्थानों से लोगों का आना जाना लगा रहता था। इस विशेषता के कारण यह स्थान व्यापारिक रूप से प्रसिद्ध था।

थराली मुख्य बाजार के पास में एक धालीबगड़ नामक मुख्य स्थान है। इस स्थान की पौराणिक समय से अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रसिद्धि है। इस स्थान पर प्रत्येक वर्ष बसन्त पंचमी के दिन से पशु मेला लगाया जाता था। मुख्य स्थान थराली के आस–पास के समस्त गॉव विभिन्न पशुओं को लेकर इस स्थान पर आया करते थे। यह पशु मेला लगभग एक सप्ताह तक चलता था। इस मेले में सभी लोगों की रात्राी विश्राम की व्यवस्था एवं खाने की व्यवस्था मेला आयोजकों द्वारा की जाती थी। इस दौरान वहॉ पशुओं का क्रय–विक्रय किया जाता था। पशुओं में गाय, भैंस, घोड़े, खच्चर, बकरी, बैल, भेड़ कुत्ते आदि पशुओं का मेला लगाया जाता था। तथा समस्त गॉव एवं क्षेत्रा के लोगों की वहॉ पर मिटिंग (बैठक) होती थी। और उस बैठक में सभी प्रकार के व्यापार पर चर्चा होती थी। थारू जाति के लोगों का मुख्य कार्य विभिन्न पशुओं एवं वस्तुओं का व्यापार करना होता था।

कोटडीप

थराली मुख्य बाजार के ऊपर एक स्थान कोटडीप है। जहॉ ब्रिटिश शासन के दौरान न्याय पंचायत लगती थी। ब्रिटिश शासन के दौरान कोटडीप नामक स्थान पर एक न्यायालय एवं कारागार का निर्माण भी अंग्रेजों द्वारा किया गया था। यहॉ पर विभिन्न अपराधों से संबंधित मामलों पर सुनवाई होती थी। तथा उनका निपटारा किया जाता था। इस व्यवस्था के तहत न्याय संबंधी सभी गतिविधियों पर न्याय पंचायत द्वारा निगरानी रख दी जाती थी। थराली क्षेत्रा की विभिन्न पट्टियों के मालिक जिनको थोकदार के नाम से जाना जाता था। जो समस्त अपने–अपने क्षेत्राों के न्यायायिक व्यवस्था का ध्यान रखते थे। विभिन्न अपराध संबंधी मामलों पर समस्त क्षेत्राों की कोटडीप में अंग्रेजों द्वारा न्याय पंचायत लगायी जाती थी। तथा संबंधित अपराधी के लिए सजा का निर्धारण किया जाता था। और इसलिए उस स्थान को कोटडीप कहाजाता था। यह एक पौराणिक स्थान है। इस स्थान का समस्त थराली क्षेत्रा अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। धीरे–धीरे इस क्षेत्रा का विकास होता चला गया। और वर्तमान में यह क्षेत्रा काफी विकसित हो गया है। वर्तमान में यहॉ पर सर्वप्रथम 1952 के आस–पास विकासखण्ड़ का दर्जा इस थराली क्षेत्रा को दिया गया। विभिन्न विकास की योजनाओं को यहॉ पर संचालित किया गया। इस कारण इस क्षेत्रा के गॉवों का विकास हुआ, शिक्षा के स्तर में वांछनीय परिर्वतन हुआ। धीरे–धीरे यहॉ पर राजस्व ग्रामों की संख्या बढ़ती गयी और वर्तमान इसे तहसील का दर्जा प्रदान कर दिया गया है। इससे इस क्षेत्रा का समस्त क्षेत्राों में विकास हुआ है।

आवागमन के साधन :

कर्णप्रयाग से ग्वालदम, बागेश्वर मार्ग का निर्माण 1962 में हुआ। व कर्णप्रयाग से यह मार्ग नारायणबगड़ से कुलसारी होते हुए थराली एवं थराली से ग्वालदम, बागेश्वर, गरूड़, पिथौरागढ, कौसानी, रानीखेत, अल्मोड़ा, हल्द्वानी, नैनीताल आदि मुख्य शहरों को जाती है। जैसे की कहा जाता है कि थराली जो वर्तमान में काफी बड़ा बाजार है इस सम्पूर्ण ऊपरी क्षेत्रा वनों से आच्छादित है। वहॉ पर किसी भी प्रकार की मानव बस्ती नही थी। धीरे–धीरे विकास होता गया और गॉव का निर्माण होता चला गया। यह क्षेत्रा अपनी गढ़वाल संस्कृति में विशेष पहचान बनाए हुए है। यहॉ पर 19 सदी के लगभग मुस्लिम लोगों का आगमन हुआ जो काफी अधिक संख्या में वर्तमान में हो गए है। ये लोग काफी समय पहले यहॉ पर व्यापार के लिए आए थे। और वर्तमान में ये यहॉ के स्थायी निवासी हो गए हैं।

सुझाव :

महिलाओं की पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक स्थिति में सुधार लाने के लिए सबसे पहले महिला को ही आगे आना होगा क्योंकि परिवार का केन्द्र महिला होती है। सर्वप्रथम परिवार से ही महिला को समान व्यवहार एवं अधिकार मिलने चाहिए तभी वह समाज एवं राष्ट्र में अपनी जगह स्थायी बना पायेंगी। हमें स्वयं का भी महिला के प्रति दृष्टिकोण बदलना होगा। बिना किसी भेद के बालिका शिक्षा का बढ़ावा देना होगा जिससे समाज एवं राष्ट्र में महिला का योगदान पुरूष के बराबर हो सके। इससे महिला के जीवन स्तर में सुधार होगा। विभिन्न शिक्षण संस्थानों एवं तकनीकि शिक्षण संस्थानों में महिला के लिए सुरक्षित स्थान होना चाहिए एवं उच्च शिक्षा में भी सरकार द्वारा सहयोग दिया जाना चाहिए क्योंकि बहुत सी गरीब महिला अपनी निर्धन स्थिति के

कारण उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती है। नारियों को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। स्वतंत्रा भारत में नारी को किसी भी पद अथवा स्थान को प्राप्त करने से वंचित नही करना चाहिए। धनोपार्जन के लिए वह कोई भी व्यवसाय या नौकरी अपनाने को स्वतंत्रा हो स्त्रियों को बाल मनो विज्ञान, पाकशास्त्रा, गृहशिलप, घरेलू चिकित्सा, गृह परिचर्चा, विभिन्न ललित कलाओं जैसे– संगीत, नृत्य, चित्राकला, छांयाकन, वाणिज्य, विज्ञान के क्षेत्रा में भी उच्च शिक्षा की व्यवस्था के साथ सरकार का सहयोग होना चाहिए। गृहस्थी को वाहन करने वाला मुख्य स्तम्भ ही अशिक्षित होगा तो गृहस्थी सुचारू पूर्वक नही चल सकती शिक्षित स्त्रियॉ विपत्ती समय सत्परामर्श से भिन्न का कतर्व्य पालन करती है गुरू की भॉति बुरे मार्ग पर चलने से अपने पति को और अपने बच्चों को रोकती है। इतने महान कर्तव्य हो और अशिक्षित हो तो समाज सुचारू रूप से नही चल सकता है। एक बालिका को शिक्षित करने से एक परिवार, एक पीढ़ी, एक युग और पूरा समाज शिक्षित किया जा सकता है नारी ही बनी रहकर सबकी ऋद्धा और सहयोग अर्जित कर सकती है। नारी का शिक्षित होना परम आवश्यक है। उसकी शिक्षा से भारतीय समाज का हित साधन होगा और वह उत्तरोतर प्रगति करेगा।

नारी तुम केवल ऋद्धा हो, विश्वास रजत–नभ–यग तल में।
पीयूष–स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

–:कविवर जय शंकर प्रसादः–

सारॉश

आज स्त्रियों को पुरूष के समान अधिकार प्राप्त है। उन्हें शिक्षा का भी पूर्ण रूपेण अधिकार प्राप्त है। स्वतन्त्रा भारत में आज स्त्राी किसी भी पद अथवा स्थान को प्राप्त करने से उसे वंचित नही करना चाहिए। स्त्राी की विभिन्न क्षेत्राों में कार्य करने के लिए पुरूषों द्वारा प्रेरित किया जाना चाहिए। जिससे वह समाज में अपनी प्रतिष्ठता को स्थापित कर सके। तथा विभिन्न सामाजिक कार्यो में सक्रीय भागीदारी निभा सके साथ ही स्त्राी शिक्षा में विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षित माताएॅ ही एक परिवार के साथ–साथ समाज व राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को निभाने में भी पूर्ण रूप से सजग होती है। केवल हमें उन्हें प्रेरित करने की आवश्यकता होती है। पुरूषों के द्वारा महिला के साथ समानता का व्यवहार किया जाना चाहिए। क्योंकि महिला परिवार का केन्द्र बिन्दु होती है। पुरूषों के द्वारा महिला के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना होगा। तथा एक सकारात्मक सोच का विकास करना होगा। जिससे महिला निर्भय होकर समाज के विकास में अपना सम्पूर्ण योगदान कर सके। तभी महिलाओं का जीवन स्तर उच्च होगा और एक सुनियोजित पीढ़ी का निर्माण होगा।

धन्यवाद ज्ञापन
मैंने प्रस्तुत क्षेत्रा का अनुसंधानात्मक सर्वेक्षण थराली ग्राम एवं अन्य आस–पास के गॉवों में जाकर किया। मेरे इस कार्य में

1.माननीय श्री हरि प्रसाद खण्डूडी निवासी थराली, चमोली।
2.श्री महावीर सिंह बिष्ट निवासी देवाल, चमोली ने मुझे विशेष सहायता प्रदान की है।
मैं आप सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूॅ।

सन्दर्भ संकेत

1.उत्तराखण्ड़ का प्राचीन इतिहास।
2.उत्तराखण्ड़ संस्कृति का इतिहास।
3.मध्य हिमालय की पौराणिक संस्कृति के पद चि∫न।
4.उत्तराखण्ड़ के रचनाकार और उनका साहित्य भाग–2 प्रोफेसर देव सिंह पोखरिया अंकित प्रकाशन हल्द्वानी।
5.मारूती अनमोल हिन्दी निबन्ध, मारूती प्रकाशन हरीनगर मेरठ।

मोहन सिंह नाथ
प्रवक्ता – हिन्दी , रा.इ.का. नारायण नगर सिनांई , जिला –चमोली गढवाल (उत्तराखण्ड़)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org